पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों का पथ विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग आगरा की
पी–एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
2018

शोध निर्देशक — शोधकत्री

डॉ0 छविलाल — रजनी सिंह

विभागाध्यक्ष — संकाय प्रमुख
पेडागॉजिकल साइंसेज — शिक्षा संकाय

शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग, आगरा – 282005

1.0 प्रस्तावना

शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। अतीतकाल से मनुष्य ने जागरुक रहकर अपनी वाक् शक्ति का व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, समुदाय और समुदाय के बीच तथा सन्तति और सन्तति के बीच अपने व्यावहारिक अनुभव–भण्डार का संचार करने के लिये उपयोग किया हैं। इनमें प्राकृतिक घटनाओं, नियमों, विधि–निषेध की संकेत भाषा का उपयोग है ताकि व्यक्ति का सामाजीकरण हो सके और वैयक्तिक स्मृति के माध्यम से पूरी जाति जीवित रह सके।

शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है। शिक्षा मनुष्य समुदाय की स्वभाविक विशेषता रही है। उसने सामाजिक विकास के हर युग में समाज को दिशा और स्वरूप देने में सहायता की है। स्वयं शिक्षा का विकास कभी अवरूद्ध नहीं हुआ। मनुष्य के सर्वोच्च आदर्शों को इसने प्रवाहित किया है। मानव इतिहास की व्यक्तिगत और सामूहिक उल्लेखनीय उपलब्धियों को शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता। इतिहास के प्रवाह–मार्ग को भी शिक्षा ने काफी सच्चाई से अंकित किया है, जिसमें कुछ युग उत्थान के हैं, कुछ पतन के, कुछ संघर्ष के हैं, कुछ निराशा के, कुछ काल सन्तुलन के हैं और कुछ बिखराव के।

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। शिक्षित व्यक्ति ही राष्ट्र की आर्थिक प्रगति को वास्तविक गति प्रदान कर सकते हैं। प्राचीन शिक्षा की पद्धति गुरूकुल प्रणाली में निहित थी। कालान्तर में मन्दिरों, मठों एवं मस्जिदों में शिक्षा का विकास कार्यक्रम चलता रहा। भारत की आजादी के पूर्व बिट्रिश शासकों ने सन् 1858 में म्योर सेन्ट्रल कॉलेज इलाहाबाद के अर्न्तगत शिक्षा की व्यवस्था प्रारम्भ की, जिसमें बेसिक शिक्षा से लेकर विद्यालयों की शिक्षा का संचालन करने का अधिकार था। धीरे–धीरे सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा के प्रसार का एक व्यापक दौर शुरू हो गया। विकास की तीव्र गति के कारण ज्ञान का विस्फोट तथा उद्योगों में नवीन ज्ञान की तकनीकी की क्रान्ति का आरम्भ हुआ। परिवर्तन की गति इतनी तीव्र हो गई कि आज सीखा गया ज्ञान दस वर्ष पुराना पड़ गया। आज के उद्योगों में अकुशल तथा अर्द्धकुशल कार्यकर्त्ता सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर पाते। कार्यकर्त्ता अपने गुणों के अनुरूप ठीक

ढ़ग से कार्य कर सकें, इसके लिये यह परमावश्यक है कि शिक्षा की व्यवस्था हमारे देश में ठीक ढ़ग से हो। चूँकि शिक्षा का प्रारम्भ बेसिक विद्यालयों से होता है। इसलिये यह परमावश्यक है कि हमारे देश में शिक्षा की व्यवस्था करने वाली सरकारें बेसिक विद्यालयों के उचित संगठन तथा संचालन की ओर विशेष ध्यान दें।

शिक्षा आयोग (1964–1966)–''भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है। हमारा विश्वास है कि यह कोई चमत्कारोक्ति नहीं है। विज्ञान और शिल्प–विज्ञान पर आधारित इस दुनिया में शिक्षा ही लोगों की खुशहाली, कल्याण और सुरक्षा के स्तर का निर्धारण करती है। हमारे स्कूल और कॉलजों से निकलने वाले छात्रों की योग्यता और संख्या पर ही राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के उस महत्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी जिसका प्रमुख लक्ष्य हमारे रहन–सहन का स्तर ऊँचा उठाना है।''

विद्यालय समाज का लघु रूप है। जिस प्रकार समाज में विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले लोग तथा अलग–अलग धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं, उसी प्रकार विद्यालय में अध्ययन हेतु आने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा जाति–धर्म आदि भी भिन्न होते हैं। विद्यालय में अध्ययन करने वाले प्रत्येक छात्र दिखने में समान लगते हैं, लेकिन गुणों के आधार पर परस्पर भिन्न होते हैं। गुणों में भिन्नता के कारण उनकी विद्यालय में शैक्षिक उपलब्धि में भी भिन्नता पायी जाती है।

प्रत्येक छात्र की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भिन्न होता है जिसके आधार पर शिक्षक उसका आंकलन करते हैं। शिक्षक आंकलन के आधार पर ही योजनाएँ बनाते हैं। नई योजनाओं के आधार पर शिक्षण कार्य करने पर वह छात्र को उसकी सामर्थ्य के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कराने में सफल होता है। छात्र की शैक्षिक उपलब्धि को उसकी सफलता, रूचि, अध्ययन की आदत, वातावरण आदि अनेक कारक प्रभावित करते हैं। इसलिये एक शिक्षक के लिये यह परमावश्यक है कि शिक्षण योजनाएँ बनाते समय शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का ध्यान रखें।

इस प्रकार शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से शैक्षिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रगति को सुनिश्चित किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का सन्तुलित एवं सर्वांगीण विकास होता है।

1.1 समस्या का प्रादुर्भाव

मानव सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला शिक्षा है। किसी भी जाति, समाज, देश तथा देश की उन्नति उसकी शिक्षा पर ही निर्भर करती है। शिक्षा हर किसी के जीवन में सफल होने के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण है। इससे जीवन की चुनौतियों को कम करने में बहुत ही मदद मिलती है। मुश्किल जीवन में शिक्षा अवधि के दौरान प्राप्त ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के बारे में आश्वस्त करता है। शिक्षा जीवन में बेहतर सम्भावनाओं को प्राप्त करने के अवसरों के लिये विभिन्न दरवाजे खोलती है। सभी के लिये जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिये बेहतर शिक्षा बहुत जरूरी है। यह आत्मविश्वास विकसित करती है और एक व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में मदद करती है। स्कूली शिक्षा हर किसी के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सम्पूर्ण शिक्षा को तीन विभागों में विभाजित किया गया है–बेसिक शिक्षा (प्राथमिक, उच्च प्राथमिक), माध्यमिक शिक्षा, और उच्च माध्यमिक शिक्षा। शिक्षा के इन तीन विभागों में बेसिक शिक्षा का महत्व सर्वाधिक है क्योंकि बेसिक शिक्षा ही वह आधार है जिस पर बालक का पूरा जीवन निर्भर करता है।

बालक इस भौतिक संसार के दुर्गुणों छल–कपट, ईर्ष्या–द्वेष, घमण्ड, हिंसा आदि से बहुत दूर होता है। उसमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता। वह अमीर–गरीब, छूत–अछूत, हिन्दू–मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई, बौद्ध, जैन, समाजसेवी नहीं होता। वह तो हर तरह के प्राणघातक भेदभावों से दूर होता है। अज्ञानी माता–पिता, अधकचरे शिक्षक और दूषित समाज बालकों के सद्‌गुणों को अपने कलुषित विचारों और भावों की चादर से ढ़ककर उसे फरिश्ते से शैतान बना देते हैं। यदि हम बालक को उसके स्वाभाविक गुणों का विकास करने का अवसर दें तो हम एक स्वस्थ्य, प्रगतिशील और गुणवान समाज का निर्माण कर सकते हैं। अतः हमें बालक

के स्वस्थ्य विकास के लिए, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, उनकी सामाजिक सुरक्षा के लिए उनको हर प्रकार का संरक्षण प्रदान करना होगा।

जब बालक विद्यालय में औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्ति के लिये जाता है, तो विद्यालय में उसके व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है जो विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनकी आन्तरिक प्रतिभाओं का विकास करते हैं। विद्यालय के वातावरण और साथी समूह के सम्पर्क में रहकर बालक जो कुछ सीखता है या जिन विषयों का अध्ययन करता है उसकी जाँच परीक्षा प्रणाली के द्वारा की जाती है जिससे बालक का शैक्षिक स्तर पता चलता है। किसी भी बालक के जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण स्थान होता है और जीवन में सफलता प्राप्त करना बालक का प्रमुख उद्देश्य होता है। बालक की शिक्षा लक्ष्य आधारित होती है, उसी के अनुरूप वह अपनी अध्ययन की योजना बनाता है। लगातार वह अपने लक्ष्य अनुरूप बनाये गये कार्यक्रम के अनुसार अध्ययन करता है लेकिन जब उसकी उपलब्धि पूर्व निर्धारित स्तर से कम होती है तो वह उन कारणों को खोजने का प्रयास करता है जिसके कारण वह अपने लक्ष्य प्राप्ति से वंचित रह गया।

शैक्षिक उपलब्धि और वातावरण का निकट सम्बन्ध होता है। बालक का परिवार, समुदाय, कक्षा तथा विद्यालय सभी बालक की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। बालक के अधिगम पर न केवल कक्षा के अन्दर के वरन् बाहर के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। कक्षा के बाहर का वातावरण शान्त होना चाहिए। निरन्तर शोरगुल से छात्रों का ध्यान सीखने की क्रिया से हट जाता है और वह विषय सम्बन्धी ज्ञान को ठीक से नहीं समझ पाता यदि कक्षा के अन्दर छात्रों के बैठने के लिये पर्याप्त स्थान नहीं है और उसमें वायु और प्रकाश की कमी है तो छात्र थोड़ी ही देर में थकान महसूस करता है और अध्ययन से उसकी रूचि हट जाती है। जो उसके शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव डालती है। विद्यालय में अध्ययन करने वाले बालक विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले होते हैं। कुछ छात्रों का पारिवारिक स्तर उच्च होता है उनके यहाँ बालकों की पढ़ाई–लिखाई के लिये पर्याप्त साधन उपलब्ध होते हैं। जिससे बालक बिना किसी चिन्ता के अपनी पढ़ाई पर ध्यान देता है और कक्षा में उच्च उपलब्धि प्राप्त करता है। इसके

विपरीत स्थिति में गरीब या साधनहीन परिवार का बच्चा उपलब्धि प्राप्ति में पिछड़ जाता है। सामाजिक–आर्थिक स्तर में भिन्नता के कारण शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता के कई अपवाद भी हैं क्योंकि कई बार यह देखा जाता है कि गरीब और साधनहीन परिवार का बच्चा भी शिक्षा जगत में उच्च प्रदर्शन करता है।

कहा जाता है कि बालक की सोच ही उसके भविष्य का निर्माण करती है। बालक अपनी सोच के अनुरूप ही बनने का प्रयास करता है। यदि बालक निरन्तर मेहनत और लगन से कार्य करता है, तो वह उसे प्राप्त भी कर लेता है। यदि बालक में किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की आकांक्षा अर्थात् इच्छा नहीं होगी तो वह उसके लिये कोई प्रयास भी नहीं करेगा। इसलिये बालक की सफलता के लिये उसमें इच्छाशक्ति का होना परमावश्यक है। इच्छाशक्ति एक शक्तिशाली हथियार की तरह है जो निम्न निष्पादन वाले बालक को उच्च शैक्षिक निष्पादन वाला बना देती है।

भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले बालकों की स्वयं के विषय में अपनी–अपनी धारणायें होती हैं। बालक स्वयं की प्रतिभाओं के विषय में जो धारणाएँ बनाता है। उसे आत्म–सम्प्रत्यय कहते हैं। मनौवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो बालक में आत्मविश्वास होना अति आवश्यक है। बालक में यदि आत्मविश्वास है तो वह शिक्षा जगत के हर क्षेत्र में कठिनाइयों का ठीक ढ़ग से सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता रहेगा और उच्च शैक्षिक उपलब्धियाँ भी हासिल करेगा इसके विपरीत स्थिति में आत्मविश्वास की कमी उसकी कठिनाइयों को बढ़ा देगी। यही बात बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर भी लागू होती है। बालक विद्यालय में जिन विषयों का अध्ययन करता है। यदि वह उन विषयों को आत्मविश्वास के साथ पढ़ता है, तो उन विषयों में उसकी उपलब्धि उच्च होती है। लेकिन यदि उसके अन्दर किसी विषय के प्रति ऐसी भावना आ जाती है कि वह उस विषय को नहीं समझ सकता है, तो उस विषय में बालक की उपलब्धि कम रहती है। इस प्रकार बालक का आत्म–सम्प्रत्यय किसी न किसी रूप में उसके शैक्षिक निष्पादन को प्रभावित करता है।

बालक विद्यालय में जब शिक्षा प्रारम्भ करता है तो वहाँ पढ़ाने वाले शिक्षकों का उसकी उपलब्धि से विशेष सम्बन्ध होता है। शिक्षक का शिक्षण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों के अधिगम पर प्रभाव डालता है। अध्यापक का व्यक्तित्व, उपयुक्त पाठ–योजना, नियोजन, विषय विशेषज्ञता, वैयक्तिक विभिन्नताओं का ज्ञान, बाल–केन्द्रित शिक्षा बनाना, पढ़ाने की इच्छा, उसकी योग्यता, कर्तव्यनिष्ठा उसके पढ़ाने की विधि और व्यवहार तथा उसके सद्गुणों की छाप छात्रों की रूचि को प्रभावित करती है। छात्र की रूचि उसकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित होती है। जिस विषय का शिक्षक जितना शिक्षकोचित गुणों से युक्त होगा उस विषय में छात्र की उपलब्धि उतनी ही अधिक होगी अन्यथा कम होगी।

सलेमी, अब्देलातिफ; अल रकेब, नूफ अब्दुलहदी तथा अन्य (2017). ए पाथ एनालेसिस ऑफ स्टूडेंट्स इन्टरेस्ट इन स्टेम, विद इस्पेसिफिक रिफरेन्स टू कतरी स्टूडेंट्स। इस अध्ययन ने उन कारकों का पता लगाने में मदद की जो कतर में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (SETM) में छात्रों की रूचि का अनुमान लगाने में मदद करते हैं। नमूने के रूप में 660 प्रारम्भिक (मध्य) और माध्यमिक (उच्च) स्कूली छात्रों को लिया गया। इस अध्ययन से पता चला कि STEM में छात्रों की रूचि शिक्षकों से प्रभावित होती है। **फैज, मोहम्मद और खान, ज़बुन निसा (2017).** ए स्टडी ऑफ एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ अपर प्राइमरी स्कूल इन रिलेशन टू देअर सोशियो–इक्नॉमिक स्टेट्स। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन करना था। अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की कक्षा में उच्च उपलब्धि तथा औसत और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की कक्षा में औसत और निम्न उपलब्धि होती है। **घाजविनी, सईद दब्बाघ (2016).** रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक सेल्फ कंसेप्ट एण्ड एकेडमिक परफॉरमेन्स इन हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शैक्षिक आत्म–प्रत्यय और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच सम्बन्ध की जाँच करना था। न्यादर्श हेतु 363 विद्यार्थियों का बहुस्तरीय क्लस्टर न्यादर्श पद्धति के द्वारा चयन किया गया। शोध के परिणाम दिखाते हैं कि शैक्षिक आत्म–प्रत्यय और शैक्षिक प्रदर्शन के बीच घनिष्ठ

सम्बन्ध था। **ऑगुनडोकुन और एडियेमो (2015)**. इन्वेस्टिगेटिड दा इन्फ्लुएन्स ऑफ इमोशनल इन्टैलिजेन्स, ऐज एण्ड एकेडमिक मोटिवेशन ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ दा स्टूडेन्ट्स एट सेकेण्डरी लेविल। इसमें विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सांवेगिक बुद्धि, आयु और शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव की जाँच करना था। अध्ययन में उन्होंने पाया कि सांवेगिक बुद्धि, आयु और शैक्षिक अभिप्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि से थोड़ा बहुत सहसम्बन्धित है। **हेयदेरी, अलीरेजा और दानेशी, रोहलाल (2015)**. एन इन्वेस्टिगेशन ऑन दा रिलेशनशिप ऑफ फैमिली इमोशनल क्लाइमेट, पर्सनल सोशियल–मोटिवेशन, एडजस्टमेन्ट एण्ड अचीवमेन्ट मोटिवेशन विद् एकेडमिक अचीवमेन्ट एण्ड मोटिवेशन अमोंग थर्ड ग्रेड हाईस्कूल मेल स्टूडेन्ट्स। इस अध्ययन में पारिवारिक भावनात्मक जलवायु, व्यक्तिगत–सामाजिक समायोजन और उपलब्धि अभिप्रेरणा की, शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बन्धों की जाँच की गई। न्यादर्श के रूप में 355 छात्रों का चयन किया गया। परिणामों से पता चलता है कि शैक्षिक उपलब्धि और पारिवारिक भावनात्मक जलवायु, व्यक्तिगत–सामाजिक समायोजन और उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच क्रमशः सकारात्मक, नकारात्मक और सकारात्मक सम्बन्ध था। **इमानुअल, एफम ओसे; एडम, एरिक असन्ते; जोसेफिन, बार्नी और सुलेमान, फोरको क्वार्टेंग (2014)**. अचीवमेन्ट मोटिवेशन, एकेडमिक सेल्फ कंसेप्ट एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट अमोंग हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स। अध्ययन में उपलब्धि प्रेरणा, अकादमिक आत्म–प्रत्यय और हाईस्कूल के छात्रों की अकादमिक उपलब्धि के बीच सम्बन्धों की जाँच की गई। न्यादर्श के रूप में 120 छात्रों का चयन किया गया। अध्ययन में आत्म–प्रत्यय और अकादमिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध पाया गया तथा उपलब्धि प्रेरणा और अकादमिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सम्बन्ध था, लेकिन सहसम्बन्ध महत्वपूर्ण नहीं था। **मुओला, जे.एम. (2010)**. ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक अचीवमेन्ट मोटिवेशन एण्ड एन्वॉयरमेन्ट अमोंग स्टैण्डर्ड ऐट पुपल्स। इस अध्ययन का उद्देश्य अकादमिक उपलब्धि प्रेरणा और गृह पर्यावरण के बीच संबंध की जाँच करना था। न्यादर्श के रूप में प्राथमिक विद्यालयों के 235 छात्रों का चयन किया गया। अध्ययन के परिणामस्वरूप घर के छह पर्यावरणीय कारकों के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया तथा

माता–पिता का प्रोत्साहन एकमात्र कारक था जो विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि प्रेरणा से सार्थक रूप से सम्बन्धित नहीं था।

उपर्युक्त अध्ययनों को देखते हुए शोधकत्री के मन में यह विचार आया कि शैक्षिक उपलब्धि एक व्यापक प्रत्यय है जो अनेक कारकों से सम्बन्धित और प्रभावित होती है। कुछ कारक शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष रूप से तो कुछ अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं तथा जो कारक शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं वह किस दिशा में उपलब्धि को प्रभावित कर रहे हैं। उक्त प्रश्न शोधकत्री के मस्तिष्क में आये और इन प्रश्नों के तार्किक और विश्वसनीय समाधान हेतु शोधकत्री ने प्रस्तुत शोध समस्या **''पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों का पथ विश्लेषणात्मक अध्ययन''** का चयन किया।

1.2 समस्या का औचित्य

एक कुशल अनुसन्धानकर्त्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व शैक्षिक अनुसन्धान के सम्पूर्ण चित्र से सुपरिचित होना चाहिए अर्थात् उस क्षेत्र में कितने अनुसन्धान किये जा चुके हैं, कौन से अनुसन्धान इस समय चल रहे हैं और किन अनुसन्धानों की उसमें आवश्यकता है? क्योंकि केवल अनुसन्धान के लिये अनुसन्धान कर लेना न तो शोधकर्त्ता के लिये उपयोगी होगा न विषय ज्ञान में समृद्धि के लिये और न ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

शिक्षा राष्ट्र के विकास का सशक्त माध्यम है। शिक्षा सम्पूर्ण जीवन तक चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता ही रहता है, नई बातें और नये अनुभवों को प्राप्त करता रहता है। इसलिये यह कहा जाता है कि शिक्षा जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा एक गतिशील विषय है इसका स्वरूप स्थिर नहीं है। शिक्षा में सरिता का स्वाभाविक प्रवाह होता है। शिक्षा का सम्बन्ध जीवन से होने के कारण उसमें गति और ग्रहण करने की शक्ति है, दूसरे शब्दों में शिक्षा एक जीवन क्रिया है। यदि हम एक प्राकृतिक

उदाहरण ले तो शिक्षा का अर्थ स्पष्ट हो जायेगा। एक उदाहरण–उस कमल का है, जो सूर्य का प्रकाश पाकर खिल उठता है और सूर्यास्त होने पर कमल की तरह कुम्हला जाता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति शिक्षा रूपी प्रकाश पाकर कमल की भाँति खिल उठता है और शिक्षा न मिलने पर अविकसित रहता है।

अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ द रिपब्लिक में शिक्षा की परिभाषा करते हुए **प्लेटो ने कहा है,** ''सच्ची शिक्षा वह, जो कुछ भी हो, उसे मनुष्यों को उनके परस्पर सम्बन्धों में और जो उनकी सुरक्षा में उनके प्रति सभ्य बनाने और मानवीयकरण की सर्वाधिक प्रवृत्ति रखती होगी (प्लेटो, दा रिपब्लिक, जोवेट, 416)।''

श्री अरविन्द के शब्दों में, ''बालक की शिक्षा उसमें जो कुछ सर्वोत्तम, सर्वाधिक शक्तिशाली, सबसे अधिक आन्तरिक और सबसे अधिक जागरूक है उसे बाहर लाना है, एक ऐसा साँचा निर्माण करना है जिसमें मानव की क्रिया और विकास चलने चाहिए और जो उसके आन्तरिक गुण और शक्ति के अनुकूल हो। उसे नयी वस्तुएँ अर्जित करनी चाहिए किन्तु वह उन्हें सर्वोत्तम रूप से समग्र रूप से अपने विकसित प्रकार और जन्मजात शक्तियों के आधार पर ही प्राप्त कर सकता है (श्री अरविन्द, ऐस्सेस ऑन दा गीता, आर्य पब्लिशिंग हाऊस, cal;p.319)।''

अतः स्पष्ट है कि शिक्षा बालक को इस योग्य बनाती है कि वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करे और समाज का उपयोगी सदस्य बने।

सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में बालक का केंद्रिय स्थान है। इसलिये कहा भी गया है कि शिक्षा बालक के लिये है न कि बालक शिक्षा के लिये है। बालक पर ही सम्पूर्ण राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है, क्योंकि आज का बालक ही आने वाले समय में देश की रक्षा के लिये प्रहरी की भाँति कार्य करेगा। इसलिये एक अध्यापक को चाहिये कि वह बालक की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर ही शैक्षिक प्रक्रिया को आगे बढ़ाये। बालक के सम्पूर्ण विकास में शिक्षक महत्वपूर्ण कारक होता है जो अपने ज्ञानरूपी प्रकाश से छात्रों के अन्धकार रूपी

अज्ञान को बाहर निकालता है। अध्यापक ही छात्रों को अच्छी आदतों तथा नैतिकता की शिक्षा देता है। एक अध्यापक तो छात्रों का उचित मार्गदर्शन करता है परन्तु छात्र की उपलब्धि के लिये अनेक कारक जिम्मेदार होते हैं।

इस तरह सब बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है। उसकी शिक्षा की अवहेलना करने पर बालक का पतन हुआ। अतः इसका उत्थान करके ही हमारे देश का कल्याण हो सकता है।

आधुनिक युग में बालक को देश का कर्णधार कहा जाता है। किसी भी राष्ट्र एवं देश का विकास बालक के ही सबल कन्धों पर होता है, ऐसा इसलिये सम्भव हुआ है, क्योंकि प्राचीनकाल से ही बालकों को विशेष महत्व दिया जाता रहा है। बालक को महत्वपूर्ण मानना केवल उसकी ओर देखना ही नहीं है। वास्तव में बालक प्रौढ़ो का संक्षिप्त रूप होता है, जब तक वह प्रौढ़ नहीं हो जाता तब तक उसके ज्ञान को अपरिपक्व और अमहत्वपूर्ण माना जाता है। जैसे–जैसे बालक ने विकास की ओर कदम बढ़ाया है, वैसे–वैसे बालक के विकास और व्यवहार को और अधिक समझने की आवश्यकता बढने लगी है।

बालक के व्यावहारिक अध्ययन का शिक्षक के लिये बहुत ही अधिक महत्व है। जब तक शिक्षक को बाल व्यवहार का ज्ञान नहीं होगा तब तक वह स्वयं को पूर्ण शिक्षक कहलाने के योग्य नहीं होगा। हर बालक में भिन्न–भिन्न शारीरिक एवं मानसिक योग्यतायें होती हैं। अतएव एक शिक्षक अपने प्रभावशाली शिक्षण से छात्रों को अधिगम के लिये प्रेरित कर सकता है। एक शिक्षक को सफल शिक्षण के लिये विषय सामग्री का स्वरूप सरल, प्रभावशाली व प्रेरणादायक रखना चाहिए तथा उसे यह भी ध्यान रखना चाहिये कि उसके शिष्य सीखते समय मानसिक थकान महसूस न करें।

अधिगम को प्रभावशाली बनाकर छात्र की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिये कई प्रभावशाली विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे–करके सीखना, निरीक्षण एवं परीक्षण करके सीखना, सामूहिक विधियों द्वारा सीखना आदि। विद्यालय में प्रत्येक छात्र का बौद्धिक स्तर भिन्न होता है। अतः कक्षा में जो भी शिक्षक सिखाता है वह प्रत्येक बालक पूर्णरूप से ग्रहण

नहीं कर सकता जिसका कारण होता है उसके सीखने में किसी प्रकार का पठार आना। इसलिये शिक्षक को इन पठारों के कारणों का पता लगाकर उसे दूर करने के उपाय करने चाहिए जिससे छात्र अच्छी तरह से अपने विषय को सीख सकें।

बालक राष्ट्र की धरोहर है, यदि कोई राष्ट्र शिक्षा और स्वास्थ्य पर पर्याप्त ध्यान नहीं देता तो ऐसे राष्ट्र में अच्छे नागरिक पैदा नहीं हो सकते और न ही वह राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

आज के वैज्ञानिक और औद्योगिक युग ने मानव जीवन को बहुत ही अधिक जटिल बना दिया है। वर्तमान समय में बालक की शैक्षिक उपलब्धि बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। जैसा कि आज हम देखते हैं कि कुछ प्रवेश परीक्षाओं में आवेदन करने हेतु शैक्षिक उपलब्धि का कुछ प्रतिशत पूर्व निर्धारित होता है, अगर बालक का शैक्षिक उपलब्धि प्रतिशत पूर्व निर्धारित प्रतिशत से कम होता है तो वह प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने से वंचित हो जाता है। छात्र की अंकतालिका ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाती है। इस प्रकार एक छात्र के लिये शैक्षिक उपलब्धि सर्वोपरी तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिये अध्यापक को यह ज्ञात करने का प्रयास करते रहना चाहिए कि विद्यार्थी से सम्बन्धित वह कौन–कौन से कारक हैं जो उसकी उपलब्धि को निम्न या उच्च करने के लिये जिम्मेदार हैं। इसी सन्दर्भ में **सेलह, लुस्वेती; जैकिंटा, क्वेना और हेलेन, मोंडोह (2018).** प्रिडिक्टिव पावर ऑफ कॉग्नेटिव स्टाइल ऑन एकेडमिक परफॉरमेन्स ऑफ स्टूडेंट्स इन सलेक्टिड नेशनल सेकेण्डरी स्कूल इन केन्या। यह अध्ययन एक सहसम्बन्धात्मक अध्ययन था जिसने संज्ञानात्मक शैलियों के इंटरैक्टिव प्रभावों और रसायन विज्ञान में अकादमिक प्रदर्शन की भविष्यवाणी की उनकी शक्ति की जाँच की। न्यादर्श के रूप में 293 छात्रों, 6 शिक्षकों और 6 परास्नातक शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन से पता चला कि तीन स्कूलों में छात्र–शिक्षक संज्ञानात्मक शैलियों का एक उच्च स्तर था तथा संज्ञानात्मक शैलियों के चार आयामों में से केवल एक आयाम अनुक्रमिक–वैश्विक आयाम रसायन विज्ञान के प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता था। **मण्डल, मुकुल बरन (2017).** इमोशनल इन्टैलिजेन्स एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ अपर प्राइमरी रूरल स्टूडेन्ट्स इन

रिलेशन टू देअर जेण्डर, फैमिली टाइप एण्ड इक्नॉमिक क्लास। इस अध्ययन में उन्होंने वर्णात्मक पद्धति का प्रयोग किया तथा यादृच्छिक विधि से 200 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया गया। यह अध्ययन बताता है कि विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच औसत सहसम्बन्ध है। **यरिस्वामी, डॉ. एम.सी. और दंडगल, एस. एन. (2017).** ए स्टडी ऑफ फैमिली क्लाइमेट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स, प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बेलगाम के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पारिवारिक जलवायु का अध्ययन करना था। शोध परिणामों से पता चलता है कि बेलगाम के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पारिवारिक जलवायु में समानता है। **एनबालगन, एस. (2017).** इम्पैक्ट ऑफ स्कूल एन्वॉयरमेन्ट ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन मदुरई डिस्टिक। इस अल्पकालिक शोधाध्ययन का उद्देश्य मदुरई जिले के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की अकादमिक उपलब्धि पर स्कूल पर्यावरण के प्रभाव की जाँच करना था। न्यादर्श के रूप में मदुरई जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 180 छात्रों को शामिल किया गया। अध्ययन से यह पता चला कि स्कूल पर्यावरण और अकादमिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सम्बन्ध है। **सिंह, डॉ0 अमिशा और शर्मा, देविका (2017).** एजूकेशनल एस्पिरेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन दा रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेन्ट। प्रस्तुत अध्ययन हेतु जम्मू जिले के नवीं कक्षा के 600 छात्रों का चयन किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि शैक्षिक आकांक्षाओं के साथ अकादमिक उपलब्धि का बहुत गहरा सम्बन्ध है। **शेखर, चन्द्र और चौधरी, प्रिया (2017).** इन्फलूएन्स ऑफ अचीवमेन्ट मोटिवेशन ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स। वर्तमान अध्ययन लिंग, अकादमिक धाराओं और स्थान के आधार पर अकादमिक उपलब्धि के अन्तरों को खोजने के उद्देश्य से किया गया था। अध्ययन हेतु 100 छात्रों का चयन किया गया था। इसके परिणाम बताते हैं कि विज्ञान और कला वर्ग के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा के बीच तथा ग्रामीण एवं शहरी छात्रों और पुरूष एवं महिला छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया जो यह संकेत करता है कि छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा में लिंग और अकादमिक प्रमुख महत्वपूर्ण

भूमिका निभाते हैं। **खट्टाब, नबिल (2015).** स्टूडेंट्स एस्पिरेशन, एक्सपेक्टेशन्स एण्ड स्कूल अचीवमेन्टःव्हाट रीयल मैटर? यह अध्ययन जाँच करता है कि कैसे आकांक्षाओं, अपेक्षाओं और स्कूल की उपलब्धि के विभिन्न संयोजन छात्रों के भविष्य के शैक्षणिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अध्ययन परिणामों से पता चलता है कि उच्च आकांक्षाओं या उच्च उम्मीदों वाले छात्रों की स्कूल उपलब्धि, कम आकांक्षाओं या कम उम्मीदों वाले छात्रों की स्कूल उपलब्धि से अधिक है। **कासनी, अजीत; मेनाती, वलीह; मेनाती, रोस्तम और खममारनिया, मोहम्मद (2015).** पाथ एनालेसिस ऑफ डिप्रेशन एण्ड क्वालिटी ऑफ लाइफ अमोंग नर्सिस। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य अवसाद सम्बन्धी कारकों के साथ–साथ इलम अस्पतालों में काम करने वाली नर्सों के जीवन की गुणवत्ता का परीक्षण करना है। न्यादर्श के रूप में 2013 के दौरान इलम के अस्पतालों में काम करने वाली सभी नर्सों को शामिल किया गया। पथ विश्लेषण से प्राप्त अंतिम मॉडल के अनुसार, अवसाद में योगदान देने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक जीवन की गुणवत्ता, वैवाहिक स्थिति, रात की शिफ्ट, उम्र, जीवन की गुणवत्ता के भौतिक घटक और ओवरटाइम के मानसिक घटक है, जो नर्सों पर उनके प्रत्यक्ष प्रभाव है। अवसाद उनके अप्रत्यक्ष प्रभावों (मानसिक और शारीरिक घटकों के माध्यम से) से अधिक मजबूत है। **अग्रवाल, माधवी और टीओटिया, डॉ. अनिल कुमार (2015).** एकेडमिक अचीवमेन्ट एण्ड सेल्फ कंसेप्ट ऑफ सेकेण्डरी लेविल स्टूडेंट्स। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग, स्कूल के क्षेत्र और माध्यमिक स्तर के छात्रों के स्कूल के प्रकार के सम्बन्ध में शैक्षिक उपलब्धि और आत्म–संकल्पना के बीच सम्बन्धों की जाँच करना था। जाँच हेतु न्यादर्श के रूप में माध्यमिक वर्ग के 400 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। परिणामों से पता चलता है कि माध्यमिक वर्ग के छात्रों में अन्तर नहीं दिखाया लेकिन लड़को ने लडकियों की तुलना में बेहतर शैक्षिक उपलब्धि दिखाई। अध्ययन में आत्म–अवधारणा के दो चरों और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सम्बन्ध भी सामने आया। **तोंगासिल्प, आसनी (2013).** ए पाथ एनालेसिस ऑफ रिलेशनशिप बिटविन फैक्टरस विद् अचीवमेन्ट मोटिवेशन ऑफ स्टूडेंट्स ऑफ प्राइवेट यूनिवर्सिटीज इन बैंकॉक। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बैंकॉक के निजी विश्वविद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा के साथ कारकों के बीच

सम्बन्धों का पथ विश्लेषण करना था। न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक रूप से 840 छात्रों का चुनाव किया गया। परिणाम दिखाते हैं कि सबसे अधिक सहसम्बन्ध भविष्य की उम्मीदों और सहपाठी रिश्तों के बीच था तथा स्वनिर्देशित सीखने, अकादमिक उपलब्धि और भविष्य की अपेक्षा का उपलब्धि–प्रेरणा पर सीधा प्रभाव पड़ा। **तिनाजेरो, कैरोलिना; लेमोस, सोनिया मारिया; अरायूजो, मेग्ररेट; फेरासेस, एम. जोसे और पैरामो, एम. फर्नाडा (2012).** कॉग्नेटिव स्टाइल एण्ड लर्निंग स्ट्रेटजिज एज फैक्टर विच अफेक्ट एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ ब्राजीलियाई यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स। प्रस्तुत अध्ययन में ब्राजील विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर फील्ड पर निर्भरता की स्वतन्त्रता नामक संज्ञानात्मक शैली के प्रभाव का पता लगाया गया और उस प्रभाव पर सीखने की रणनीतियों का मध्यस्थता प्रभाव भी देखा गया। अध्ययन हेतु विभिन्न क्षेत्रों से 313 प्रथम वर्ष के विश्वविद्यालयी छात्रों की सीखने की रणनीति, क्षेत्रीय निर्भरता पर ऊपरी, मध्यम और निम्न स्कोर के साथ आत्म–रिपोर्ट प्रश्नावली पर मूल्यांकन किया गया था। पहले वर्ष के उनके समग्र अकादमिक अंक पंजीकृत थे। प्रतिगमन विश्लेषण के परिणाम बताते हैं कि संज्ञानात्मक शैली और सीखने की रणनीतियों ने शैक्षिक उपलब्धि में काफी योगदान दिया। इससे पता चलता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर संज्ञानात्मक शैली के प्रभाव में योजना रणनीतियाँ मध्यस्थता की भूमिका निभाती हैं। **असियाई, रोमिना इफ्योमा (2012).** एसेसिंग स्कूल फैस्लिटिज इन पब्लिक सेकेण्डरी स्कूलस् इन डेल्टा स्टेट, नाइजीरिया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्कूलों के प्रशासकों द्वारा सुविधाओं पर किये गए रखरखाव के प्रकार, विद्यालयों के मूल्यह्रास को प्रोत्साहित करने वाले कारकों की स्थिति का पता लगाना था। इसके लिये 640 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि स्कूलों में, स्कूल की सुविधायें आमतौर पर निराशा की स्थिति में होती हैं। **ओवेय, जोसेफ संडे और यारा, फिलीस ओलातुंड (2011).** स्कूल फैस्लिटीज एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल एग्रीकल्चर साइंस इन एकिती स्टेट, नाइजीरिया। प्रस्तुत अध्ययन ने स्कूली सुविधाओं के प्रावधान को देखा क्योंकि यह नाइजीरिया के एकिती राज्य में कृषि विज्ञान के छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन से सम्बन्धित हैं। नतीजे बताते हैं कि पुस्तकालय सुविधाओं की

उपलब्धता, पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता और प्रयोगशालाओं की उपलब्धता में ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालयों के बीच छात्रों के प्रदर्शन में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। **आरून जे0, लिंर्डेमेन (2010).** सेविन्थ ग्रेड स्टूडेन्ट कैरियर एस्पिरेशन एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सातवीं कक्षा के छात्रों की कैरियर की आकांक्षा और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सीधे सम्बन्ध का पता लगाना है। अध्ययन हेतु संयुक्त राज्य शहर के माध्यमिक विद्यालय के 39 छात्रों का चयन किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि कैरियर की आकांक्षा का शैक्षिक उपलब्धि के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। **नायर, प्रकाश कृष्णन् (2007).** ए पाथ एनालेसिस ऑफ रिलेशनशिप अमोंग जॉब स्ट्रेस, जॉब सेटिसफेक्शन, मोटिवेशन टू ट्रान्सफर एण्ड ट्रान्सफर ऑफ लर्निंग : परसेप्शन ऑफ ऑक्यूपेशनल सेफ्टी एण्ड हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन आउटरिच ट्रेनर। प्रस्तुत अध्ययन में नौकरी के तनाव, नौकरी की सन्तुष्टि, स्थानान्तरण के लिए प्रेरणा और सीखने के स्थानान्तरण के बीच सम्बन्ध की जाँच की गई है। इसके लिये टेक्सास द्वारा आयोजित प्रशिक्षण से गुजरने वाले प्रशिक्षकों को चयनित किया गया है। नमूने के रूप में 1234 आउटरीच प्रशिक्षकों की आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले 418 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि (1) नौकरी के तनाव और स्थानान्तरण के बीच सम्बन्ध को नौकरी की सन्तुष्टि और स्थानान्तरण की प्रेरणा द्वारा मध्यस्थता दी गई थी। (2) समय के तनाव और स्थानान्तरण के बीच के सम्बन्ध को नौकरी की सन्तुष्टि और स्थानान्तरण के लिये प्रेरणा द्वारा मध्यस्थता दी गई। (3) चिन्ता और स्थानान्तरण के बीच के सम्बन्ध को नौकरी की सन्तुष्टि और स्थानान्तरण के लिये प्रेरणा द्वारा मध्यस्थता दी गई थी। (4) अन्त में समय तनाव और स्थानान्तरण के बीच सम्बन्ध को चिन्ता, नौकरी की सन्तुष्टि और स्थानान्तरण के लिये प्रेरणा द्वारा मध्यस्थता दी गई थी।

साहित्य का गहनता से सर्वेक्षण करने के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ उनकी सांवेगिक बुद्धि, लिंग, परिवार के प्रकार, आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा, व्याकुलता स्तर, आत्म–प्रत्यय, सामाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षिक

आकांक्षा स्तर, विद्यालय वातावरण, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक सुविधायें, संज्ञानात्मक शैली, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा आदि घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। ये सभी कारक छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन इन सभी कारकों का एक साथ अध्ययन करना सम्भव नहीं था। इसीलिये शोधार्थिनी ने अपनी चयनित समस्या में इनमें से कुछ प्रमुख कारकों जैसे – विद्यालय का वातावरण, आत्म–प्रत्यय, सामाजिक आर्थिक स्तर, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक सुविधायें, संज्ञानात्मक शैली, शैक्षिक आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा आदि का चयन किया जो शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1.3 समस्या कथन–

''पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों का पथ विश्लेषणात्मक अध्ययन''

1.4 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या–

1.4.1 पूर्व माध्यमिक स्तर–पूर्व माध्यमिक स्तर से तात्पर्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त तथा सरकार द्वारा संचालित उन शैक्षिक संस्थाओं से है, जहाँ कक्षा 6 से 8 तक की कक्षाएँ संचालित होती हैं।

1.4.2 विद्यार्थी–विद्यार्थी शब्द से तात्पर्य सरकार द्वारा संचालित अथवा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 तक अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं से है। जिनकी आयु लगभग 10 से 14 वर्ष तक होती है।

1.4.3 शैक्षिक उपलब्धि–

शिक्षा का शब्दकोश, गुड (1973), किसी दिए गये कौशल या ज्ञान के प्रदर्शन की उपलब्धि या प्रवीणता के रूप में अकादमिक उपलब्धि को परिभाषित करता है।

कार्यात्मक परिभाषा–प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन कक्षा में प्राप्त प्राप्तांकों के कुल योग से है। विद्यार्थियों द्वारा कक्षा 7 के अन्त में प्राप्त

परिणामों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया जायेगा। शोधार्थिनी द्वारा पूर्व माध्यमिक स्तर के कक्षा 8 के विद्यार्थियों को ही न्यादर्श चयन में शामिल किया जायेगा और कक्षा 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियों द्वारा उत्तीर्ण कक्षा 7 के वार्षिक परीक्षा परिणामों को लेना अधिक सार्थक होगा क्योंकि विद्यार्थियों के द्वारा समय–समय पर प्राप्त प्राप्तांक उनकी उपलब्धि का अधिक सार्थक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं।

1.4.4 शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारक–शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों से तात्पर्य उन घटकों से है, जो शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने में अपना योगदान देते हैं।

1.4.4.1 विद्यालय का वातावरण–

डेव के अनुसार (1963), विद्यालय वातावरण; परिस्थितियाँ, प्रक्रियाएँ, और मनोवैज्ञानिक उत्तेजना है जो बालक की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

कार्यात्मक परिभाषा– प्रस्तुत शोध अध्ययन में माना गया है कि विद्यालय का वातावरण एक विशिष्ट वातावरण है, जिसमें रहकर बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास होता है। विद्यालय में शिक्षक बालकों के लिये ऐसा वातावरण उपस्थित कर सकता है, जिससे उनमें विचारों की उचित अभिव्यक्ति, शिष्ट सामाजिक व्यवहार, कर्तव्यों और अधिकारों का ज्ञान, स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण आदि गुणों का अधिकतम विकास हो सकता है। विद्यालय के वातावरण का बालक की उपलब्धि से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है, जहाँ जीवन के कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो।

1.4.4.2 सामाजिक–आर्थिक स्तर–

कालिया और साहू (2012), सामाजिक–आर्थिक स्तर को किसी व्यक्ति की उस स्थिति के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसमें सामाजिक–सांस्कृतिक भागीदारी के स्तर, व्यक्तियों को प्रभावित करने की योग्यता, शिक्षा के स्तर, व्यवसाय की प्रवृत्ति, वित्तीय स्थिति,

स्वास्थ्य, कल्याण और जीवन शैली, आकांक्षा का स्तर, भौतिक संसाधनों के प्रकार, सेवाएँ और अवकाश की सुविधाएँ शामिल हैं, जो परिवार को आनन्द देती हैं।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में माना गया है कि बालक जिस समाज में रहता है, उसी के अनुसार वह स्वयं को ढाल लेता है। उसकी परम्पराएँ, मान्यताएँ, रहन–सहन, खान–पान समाज के द्वारा ही निर्धारित होती हैं। सामाजिक–आर्थिक स्तर–बालक की प्रत्येक कार्यप्रणाली पर अपना प्रभाव डालता है। इसीलिये माना जाता है कि बालक का सामाजिक–आर्थिक स्तर कहीं न कहीं उसकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित होता है।

1.4.4.3 पारिवारिक वातावरण–

मिश्रा के अनुसार (1986), गृह पर्यावरण को घर के भीतर बच्चे को उपलब्ध सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक समर्थन की गुणवत्ता और मात्रा के उपायों के रूप में जाना जाता है।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में माना गया है कि परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है। जहाँ माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ रहकर बालक बड़ा होता है। परिवार में रहकर ही वह अनुकरण द्वारा अनेक बातें सीखता है। बालक की रूचि, आदतों, योग्यताओं के विकास में परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारिवारिक सदस्यों की प्रेरणा, सहयोग, दिशा–निर्देश, प्रोत्साहन सभी मिलकर पारिवारिक वातावरण का निर्माण करते हैं। जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर अवश्य दृष्टिगोचर होता है।

1.4.4.4 शैक्षिक सुविधाएँ–

वर्जीनिया कोड (2012), ''शैक्षिक सुविधा'' का अर्थ है नामांकित छात्रों के निर्देश के लिए उपयोग की जाने वाली किसी भी इमारत, जो केवल दिन–देखभाल केन्द्र तक ही सीमित नहीं बल्कि इसमें नर्सरी स्कूल, निजी व सार्वजनिक स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, मेडिकल स्कूल, लॉ स्कूल, करियर एवं तकनीकी शिक्षा स्कूल शामिल हैं।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक सुविधाओं से अभिप्राय विद्यार्थियों को विद्यालय में उनकी पढ़ाई को आसान बनाने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये दी जाने वाली सुविधाओं से है। इसके अन्तर्गत शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिये दिया जाने वाला आरक्षण, छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण, छात्रावासीय सुविधाएँ, वित्तीय सहायता, निःशुल्क कोचिंग की सुविधा आदि अन्य सुविधाएँ आती हैं।

1.4.4.5 संज्ञानात्मक शैली–

विटकिन एट अला (1977), संज्ञानात्मक शैली स्वयं के कार्य करने की विशेषता के रूप में वह है, जो व्यक्ति अपनी अवधारणात्मक और बौद्धिक क्रियाओं के रूप में दर्शाता है।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में माना गया है कि संज्ञानात्मक शैली स्वनिर्मित, क्षणिक, स्थिति जनित रूप से निर्धारित वह गतिविधि है, जिसके द्वारा शिक्षार्थी जानकारी को व्यवस्थित करने, उसे नियन्त्रित करने, प्राप्त करने और संचार करने तथा अन्तिम व्यवहार के लिये उपयोग करता है। संज्ञानात्मक शैली को एक व्यक्ति की काफी विशिष्ट विशेषता के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्ति की अपेक्षाकृत स्थिर विशेषता है।

1.4.4.6 शैक्षिक आकांक्षा स्तर–

फ्रैंक (1935), इसे एक परिचित कार्य में भविष्य के प्रदर्शन के स्तर के संदर्भ में परिभाषित करता है, जो एक व्यक्ति उस कार्य में अपने पिछले प्रदर्शन के स्तर को जानने के लिये, स्पष्ट रूप से पहुँचने के लिये कार्य करता है।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में माना गया है कि किसी बालक का शैक्षिक आकांक्षा स्तर, भविष्य की अपेक्षा या महत्वाकांक्षा है। यह स्वप्रेरणा का एक रूप है। जिसमें बालक की अपने पिछले प्रदर्शन के साथ प्रतिस्पर्धा शामिल है। यह आमतौर पर पर्यावरण तथा व्यक्तिगत दोनों कारकों से प्रभावित होता है। आकांक्षा का स्तर एक गतिशील स्थिति में एक व्यक्ति की महत्वाकांक्षा का मतलब है कि यह एक व्यक्ति का लक्ष्य या किसी काम के लिए अपने स्वयं के भविष्य के प्रदर्शन की भलाई के सम्बन्ध में उम्मीद है।

1.4.4.7 आत्म–प्रत्यय–

सारस्वत और गौर (1981), ने इसे स्वयं को देखने का व्यक्तिगत तरीका बताया और ये सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के तरीके को दर्शाता है।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में माना गया है कि आत्म–प्रत्यय वह सामान्य पद है, जिसका अर्थ है व्यक्ति के गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में उसका मत। एक व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में जो अपना मत रखता है, वही उसका आत्म–प्रत्यय है। व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं और गुणों के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति, निर्णय और मूल्यों के योग को ही आत्म–प्रत्यय कहते हैं।

1.4.4.8 शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा–

मैकलेलैंड (1985), उपलब्धि प्रेरणा को उस सीमा के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें व्यक्तियों के अपने प्रयासों के लिये पुरस्कार प्राप्त करने की आवश्यकता जैसे– भौतिक सन्तुष्टि, दूसरों के द्वारा और व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना में अन्तर होता है।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा से तात्पर्य बालक को उसकी रूचियों, आदतों, योग्यताओं को ध्यान में रखकर उसकी शैक्षिक निष्पत्ति को अधिकतम करने के लिये, उसे प्रोत्साहित करने से है।

1.4.4.9 पथ विश्लेषण– पथ विश्लेषण के अन्तर्गत चरों के बीच दृष्टिगोचित सम्बन्धों को विघटित किया जाता है। जिससे सम्बन्धों की व्याख्या तथा चरों के एक–दूसरे पर पड़ रहे प्रभाव के प्रारूप को अच्छी तरह से समझा जा सके।

1.5 शोध अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले चरों के बीच सम्बन्धों की जाँच कर उनके प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव का पता लगाकर उनकी दिशा का निर्धारण करना है।

1.6 काल्पनिक पथ का निर्धारण–

पथ विश्लेषण एक ऐसी प्रविधि है जो अप्रयोगात्मक अनुसन्धानों की स्थिति में कारणीय सम्बन्धों के बारे में निष्कर्ष प्राप्त करने के प्रयास में सहायक सिद्ध हो सकती है। पथ विश्लेषण के अन्तर्गत परस्पर सम्बन्धित चरों के बीच दृष्टिगोचित सम्बन्धों की दिशा व परिणाम को रेखाचित्रीय निदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसमें चरों के एक–दूसरे को प्रभावित करने व प्रभावित होने की दिशा का पथ समझा जा सके।

इसी सन्दर्भ में पूर्व में हुए शोध अध्ययन– **जैन, डॉ. पारस; बिलाइया, रोशनी; रिषु, अग्रवाल और परिहार, खशबू सिंह (2017).** रॉल ऑफ फैमिली एन्वॉयरमेन्ट एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ स्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग मदर। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के स्कूल के छात्रों के पारिवारिक माहौल में अन्तर का अध्ययन तथा उनकी अकादमिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक रूप से 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन से यह पता चला कि परिवार का पर्यावरण और छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन, मॉ की कामकाजी स्थिति से प्रभावित होता है। **पप्पट्टू, जसर (2017).** ए स्टडी ऑन फैमिली एन्वॉयरमेन्ट एण्ड इट्स इफैक्ट ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट इन साइन्स अमोंग सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स। इस अध्ययन का उद्देश्य परिवार के पर्यावरण और विज्ञान में अकादमिक उपलब्धि पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना था। इसके लिये न्यादर्श के रूप में 300 छात्रों का चयन किया गया। अध्ययन में निष्कर्ष निकला कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पारिवारिक पर्यावरणीय कारकों और विज्ञान कौशल में उपलब्धि के बीच कोई सम्बन्ध मौजूद नहीं है। **कक्कर, निधि (2016).** ए स्टडी ऑफ एकेडमिक अचीवमेन्ट इन रिलेशन टू होम एन्वॉयरमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स। इस अध्ययन का उद्देश्य गृह पर्यावरण और अकादमिक उपलब्धियों के बीच सम्बन्धों का पता लगाना है। अध्ययन हेतु यादृच्छिक रूप से 160 छात्रों का न्यादर्श लिया गया तथा इसके परिणामों से यह बात स्पष्ट होती है कि गृह पर्यावरण किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं डालता है।

सोलिमेनिफर, ओमिड; शाबनी, फरजाना और मोरोवती, जेक्रोलह (2013) दा रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक अचीवमेन्ट मोटिवेशन एण्ड एकेडमिक वर्नआउट इन पोस्टग्रेजुएट स्टूडेंट्स। इस अध्ययन का उद्देश्य शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा और अकादमिक प्रोत्साहन के बीच सम्बन्धों की जाँच करना था। न्यादर्श हेतु यादृच्छिक रूप से चुने गये 150 छात्रों को शामिल किया गया। परिणामों से पता चलता है कि शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा, विशेष रूप से आन्तरिक प्रेरणा ने अकादमिक प्रोत्साहन की भविष्यवाणी करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई। **लॉरेन्स, ए. एस. अरूल और विमला ए. (2012).** स्कूल एन्वॉयरमेन्ट एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ स्टैंडर्ड IX स्टूडेंट्स। प्रस्तुत अध्ययन 9वीं कक्षा के छात्रों के विद्यालयी पर्यावरण और अकादमिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध की जाँच करने के लिये किया गया है। न्यादर्श हेतु 9वीं कक्षा के 400 छात्रों का चयन किया गया और निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों के विद्यालयी पर्यावरण और अकादमिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

उपरोक्त एवं पूर्व वर्णित शोधाध्ययनों के आधार पर शोधकत्री ने निम्न काल्पनिक पथ का निर्धारण किया–

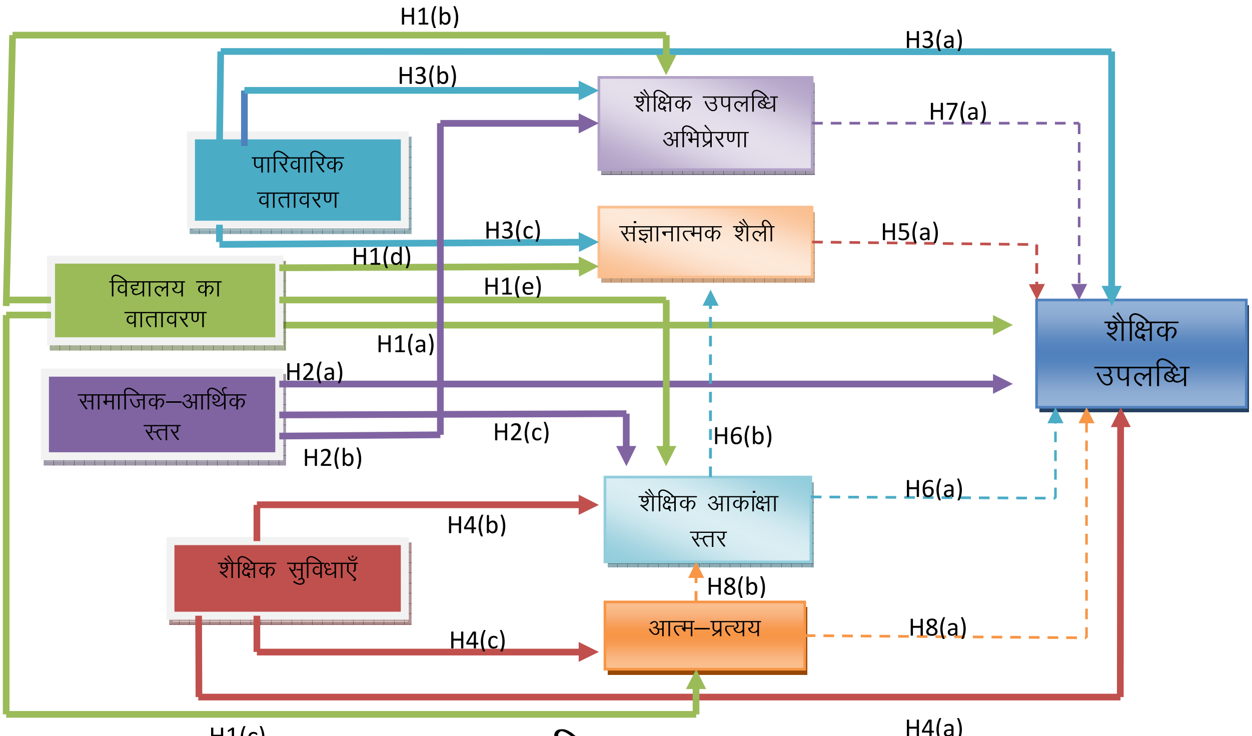

काल्पनिक पथ

1.7 शोध परिकल्पनाएँ–

1(a)– विद्यालय के वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा विद्यालय का वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

1(b)–विद्यालय के वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा विद्यालय का वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

1(c)–विद्यालय के वातावरण एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा विद्यालय का वातावरण, आत्म–प्रत्यय का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

1(d)–विद्यालय के वातावरण एवं संज्ञानात्मक शैली के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा विद्यालय का वातावरण, संज्ञानात्मक शैली का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

1(e)– विद्यालय के वातावरण एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा विद्यालय का वातावरण, शैक्षिक आकांक्षा स्तर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

2(a)–सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

2(b)–सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

2(c)–सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षिक आकांक्षा स्तर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

3(a)–पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

3(b)–पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

3(c)–पारिवारिक वातावरण एवं संज्ञानात्मक शैली के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा पारिवारिक वातावरण, संज्ञानात्मक शैली का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

4(a)–शैक्षिक सुविधाओं एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा शैक्षिक सुविधाएँ, शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

4(b)–शैक्षिक सुविधाओं एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा शैक्षिक सुविधाएँ, शैक्षिक आकांक्षा स्तर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

4(c)–शैक्षिक सुविधाओं एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा शैक्षिक सुविधाएँ, आत्म–प्रत्यय का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

5(a)– संज्ञानात्मक शैली एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा संज्ञानात्मक शैली, शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

6(a)–शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

6(b)–शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं संज्ञानात्मक शैली के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर, संज्ञानात्मक शैली का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

7(a)–शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा, शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

8(a)–आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा आत्म–प्रत्यय, शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

8(b)–आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मध्य महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसम्बन्ध है तथा आत्म–प्रत्यय, शैक्षिक आकांक्षा स्तर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

1.8 अध्ययन का परिसीमांकन–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन आगरा मण्डल के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित रखा जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत सभी विद्यालय सरकार द्वारा संचालित तथा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होंगे।
3. शोध अध्ययन के अन्तर्गत शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों में केवल विद्यालय का वातावरण, सामाजिक–आर्थिक स्तर, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक सुविधाएँ, संज्ञानात्मक शैली, शैक्षिक आकांक्षा स्तर, आत्म–प्रत्यय, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा आदि को शामिल किया जायेगा।
4. शोध अध्ययन केवल पूर्व माध्यमिक स्तर के कक्षा 8 के विद्यार्थियों तक सीमित रखा जायेगा।

1.9 अध्ययन की विधि–

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जॉन डब्ल्यू0 बेस्ट (1972) के अनुसार– ''वर्णात्मक अनुसंधान क्या है, का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वर्तमान में हैं, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रही हैं, प्रक्रियाएँ जो चल रही हैं, अनुभव जो प्राप्त किये जा रहे हैं अथवा नयी दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं, उसी से उसका सम्बन्ध है।''

1.10 न्यादर्श का चयन–

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श का चयन निम्न प्रकार किया जायेगा–

1.10.1 जनसंख्या—आगरा मण्डल में स्थित उ0 प्र0 सरकार द्वारा संचालित एवं मान्यता प्राप्त पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले सभी छात्र—छात्राओं को शामिल किया जायेगा।

1.10.2 प्रतिदर्श—आगरा मण्डल आगरा में स्थित उ0 प्र0 सरकार द्वारा संचालित एवं मान्यता प्राप्त शैक्षिक संस्थाओं से कक्षा 8 के 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन प्रतिदर्श की सोद्देश्य विधि से किया जायेगा तथा संस्थाओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा।

1.11 शोध अध्ययन के चर—

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन के समस्त चरों को तीन भागों में विभाजित किया गया है—

1.11.1 बाह्य स्वतन्त्र चर— पारिवारिक वातावरण, विद्यालय का वातावरण, सामाजिक—आर्थिक स्तर, शैक्षिक सुविधाएँ।

1.11.2 आन्तरिक स्वतन्त्र चर— संज्ञानात्मक शैली, शैक्षिक आकांक्षा स्तर, आत्म—प्रत्यय, शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा।

1.11.3 आश्रित चर—शैक्षिक उपलब्धि

1.12 उपकरण—

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा—

- पारिवारिक वातावरण के अध्ययन हेतु मिश्रा, के. एस. के घरेलू वातावरण सूची (2017) का प्रयोग किया जायेगा।
- विद्यालय के वातावरण के अध्ययन हेतु अग्रवाल, श्वेता और दीक्षित, शालिनी के विद्यालयी वातावरण के पैमाने (2017) का प्रयोग किया जायेगा।
- सामाजिक—आर्थिक स्तर के अध्ययन हेतु भारद्वाज, राजीव के सामाजिक—आर्थिक स्तर के पैमाने (2017) का प्रयोग किया जायेगा।

- शैक्षिक सुविधाओं के अध्ययन हेतु शोधकत्री द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।
- शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के अध्ययन हेतु शर्मा, टी. आर. के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण (Revised 2006) का प्रयोग किया जायेगा ।
- संज्ञानात्मक शैली के अध्ययन हेतु शोधकत्री द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।
- शैक्षिक आकांक्षा स्तर के अध्ययन हेतु खान, यशमीन घानी के शैक्षिक आकांक्षा स्तर परीक्षण (2017) का प्रयोग किया जायेगा।
- आत्म–प्रत्यय के अध्ययन हेतु अहलूवालिया, एस. पी. और सिंह, एच. एस. के आत्म–सम्प्रत्यय परीक्षण (2017) का प्रयोग किया जायेगा।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु कक्षा सात के वार्षिक परीक्षाफल को आधार माना जायेगा।

1.13 सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

- शोधार्थिनी के द्वारा निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा –

  वर्णनात्मक सांख्यिकी

  - **मध्यमान** – दो या अधिक चरों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना करने के लिए मध्यमान की गणना की जायेगी।
  - **मानक विचलन** – चरों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना करने के लिए मानक विचलन की गणना की जायेगी।
  - **सहसम्बन्ध गुणांक** – स्वतन्त्र चरों के परतन्त्र चरों (आन्तरिक स्वतन्त्र चर, आश्रित चर) पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की जायेगी।

- **अनुमानात्मक सांख्यिकी** – अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाओं की जाँच व अभीष्ट पथ निर्धारण करने के लिए पथ विश्लेषण सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।
    - **पथ विश्लेषण** – पथ विश्लेषण वह प्रविधि है जिसका प्रयोग उस समय किया जा सकता है जिन परिस्थितियों में नियन्त्रित प्रयोग करना असम्भव अथवा अव्यवहारिक होता है वहाँ सर्वेक्षण से प्राप्त समंकों के आधार पर दृष्टिगोचित कारणीय सम्बन्धों को पथ विश्लेषण के द्वारा समझने का प्रयास किया जाता है।

1.14 शैक्षिक निहितार्थ

सम्पूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया में पूर्व माध्यमिक स्तर की शिक्षा का प्रमुख स्थान है। विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी समाज के विभिन्न वर्गों से आते हैं और प्रत्येक विद्यार्थी की अलग–अलग धारणाएँ, रूचियाँ तथा अन्य कई घटकों के आधार पर उनमें विभिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। इन व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण ही विद्यालय में एक विद्यार्थी का शैक्षिक उपलब्धि स्तर अन्य विद्यार्थियों से भिन्न होता है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थिनी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन ''पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों का पथ विश्लेषणात्मक अध्ययन'' का चयन किया। प्रस्तुत शोधाध्ययन का शिक्षा के क्षेत्र में महत्व को हम निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम यह पता लगा सकेंगे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय के वातावरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है या विद्यालय का वातावरण शैक्षिक उपलब्धि को किसी अन्य चर के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम यह पता लगा सकेंगे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है या पारिवारिक वातावरण शैक्षिक उपलब्धि को किसी अन्य चर के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम यह पता लगा सकेंगे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है या सामाजिक–आर्थिक

स्तर शैक्षिक उपलब्धि को किसी अन्य चर के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम यह पता लगा सकेंगे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक सुविधाएँ का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है या शैक्षिक सुविधाएँ शैक्षिक उपलब्धि को किसी अन्य चर के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम यह पता लगा सकेंगे कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा, शैक्षिक अकांक्षा स्तर, संज्ञात्मक शैली एवं आत्म–प्रत्यय का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है या नहीं।

अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा हम उपर्युक्त कारकों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध यह पता लगा सकेंगे, जिससे आगे आने वाले समय में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखने वाले कारकों में सुधार करने का तथा कुछ ऐसे उपाय खोजने का प्रयास किया जा सकेगा, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित न हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, माधवी और टीओटिया, डॉ. अनिल कुमार (2015). एकेडमिक अचीवमेन्ट एण्ड सेल्फ.कंसेप्ट ऑफ सेकेण्डरी लेविल स्टूडेंट्स, इन्टरनेशनल जनरल एजूकेशन एण्ड रिसर्च जनरल, 1(3),26–33
- एनबालगन, एस. (2017). इम्पैक्ट ऑफ स्कूल एन्वॉयरमेन्ट ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन मदुरई डिस्टिक, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ अप्लाइड रिसर्च, 3(5), 732–737
- असियाई, रोमिना इफ्योमा (2012), एसेसिंग स्कूल फैस्लिटिज इन पब्लिक सेकेण्डरी स्कूलस् इन डेल्टा स्टेट, नाइजीरिया, एन इण्टरनेशनल मल्टीडिसिपिल्नरी जर्नल इथियोपिया 6(2), 192–205. DOI:http://dx.doi.org/10.4314/afrrev.v6i2.17
- बेक, कैरलाइन (2017). ए स्टडी ऑफ वैल्यूज, सोशियल बिहेवियर, एडजस्टमेंट एण्ड एकडेमिक अचीवमेन्ट मोटिवेशन ऑफ दा स्टूडेंट्स बिलोंगिंग टू ऑरफान्जस Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/185670
- चौहान, संदीप कुमार; पाराशर, ज्योतिमा और शर्मा, कु0 पूनम (2017) बाल मनोविज्ञान एक अध्ययनः आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, उत्तर प्रदेश
- द्विवेदी, संजय कुमार (2008). माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर शैक्षिक उपलब्धि एवं शिक्षण–अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन। Reterived from http://hal.handle.net/10603/14915
- इमानुअल,एफम ओसे; एडम, एरिक असन्ते; जोसेफिन, बार्नी और सुलेमान, फोरको क्वार्टेंग (2014). अचीवमेन्ट मोटिवेशन, एकेडमिक सेल्फ-कंसेप्ट एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट अमोंग हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, यूरोपियन जनरल ऑफ रिसर्च एण्ड रिफलेक्शन इन एजूकेशनल साइन्सेज, 2(2),24-37. Retrieved from www.idpublications.org

- फैज, मोहम्मद और खान, ज़बुन निसा (2017). अ स्टडी ऑफ एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ अपर प्राइमरी स्कूल इन रिलेशन टू देअर सोशियो–इक्नॉमिक स्टेट्स, एशियन जनरल ऑफ रिसर्च इन सोशियल साइन्सेज एण्ड हयूमेनटिज,7(6), 121–127.Doi:10.5958/2249-7315.2017.00336.7 eved from https://doi.org/10.1016/i.sbcpro.2011.03.235
- गैरेट, हेनरी ई. और वुडवर्थ, आर. एस. (1981). स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशनः मिसेज ए. एफ. शेख फॉर वकील्स, फेफ्फेर एण्ड सिमोन्स लि0, बॉम्बे
- घाजविनी, सईद दब्बाघ (2011). रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक सेल्फ.कंसेप्ट एण्ड एकेडमिक परफॉरमेन्स इन हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, प्रॉसेडिया सोशियल एण्ड बिहेवियरल साइन्सेज, 15,1034–1039. Retrieved from https://doi.org/10.1016/j.sbspro. 2011. 03.235
- गुप्ता, प्रोफेसर एस.पी. और गुप्ता, डॉ. अलका (2008) सांख्यिकीय विधियाँः शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उ0प्र0
- हेयदेरी, अलीरेजा; दानेशी, रोहलाल (2015). एन इन्वेस्टिगेशन ऑन दा रिलेशनशिप ऑफ फैमिली इमोशनल क्लाइमेट, पर्सनल सोशियल–मोटिवेशन, एडजस्टमेन्ट एण्ड अचीवमेट मोटिवेशन विद् एकेडमिक अचीवमेन्ट एण्ड मोटिवेशन अमोंग थर्ड ग्रेड हाईस्कूल मेल स्टूडेन्ट्स ऑफ अहवाज, जनरल ऑफ अप्लाइड लिंगुस्टिक एण्ड लैंगुवेज लर्निंग, 1(1), 6–13. Doi:10.5923/j.jalll.20150101-02
- जैन, डॉ. पारस; बिलाइया,रोशनी; रिषु, अग्रवाल और परिहार, खशबू सिंह (2017). रॉल ऑफ फैमिली एन्वॉयरमेन्ट एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ स्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग मदर, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एडवान्सड एजूकेशन एण्ड रिसर्च, 2(2), 56.57
- कक्कर, निधि (2016). अ स्टडी ऑफ एकेडमिक अचीवमेन्ट इन रिलेशन टू होम एन्वॉयरमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स, स्कॉलरली रिसर्च जनरल ऑफ हयूमेनटिज साइन्स एण्ड

इंगलिश लैंगुवेज, 3/13, 3247-3253- Retrieved from SRJIS/BLMONTHLY /DR.NIDHIKAKKAR

- खट्टाब, नबिल (2015). स्टूडेंट्स एस्पिरेशन, एक्सपेक्टेशन्स एण्ड स्कूल अचीवमेन्टरूव्हाट रीयल मैटर?, ब्रिटिश ऐजूकेशनल रिसर्च जनरल, 41(5),731–748. Retrieved from https://doi.org/10.1002/berj.3171
- किशोर, एन0 (2013) एकेडमिक अचीवमेंट इन रिलेशन टू स्कूल एन्वॉयरमेन्ट, होम एन्वॉयरमेन्ट एण्ड मैंटल हेल्थ स्टेट्स अमँग हाईस्कूल स्टूडेंट्स Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/110044
- कुमार, नवीन (2016). क्लासरूम मॉरल एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ एडॉलसेन्ट स्टूडेंटस इन रिलेशन टू देअर क्रिएटिविटी एण्ड सोशियो–इकोनोमिक स्टेट्स Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/208109
- कासनी, अजीज; मेनाती, वलीह; मेनाती, रोस्तम और खममारनिया, मोहम्मद (2015) पाथ एनालेसिस ऑफ डिप्रेशन एण्ड क्वालिटी ऑफ लाइन अमेंग नर्सिस, हेल्थस्कोप (4), DOI:10.17795/ihealthscope-23353
- लॉरेन्स,ए.एस. अरूल और विमला ए. (2012). स्कूल एन्वॉयरमेन्ट एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ स्टैंडर्ड 9 स्टूडेंट्स, जनरल ऑफ ऐजूकेशनल एण्ड इन्स्ट्रक्शनल स्टडीज, 2(3),210-215
- मण्डल, मुकुल बरन (2017). इमोशनल इन्टैलिजेन्स एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ अपर प्राइमरी रूरल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देअर जेण्डर, फैमिली टाइप एण्ड इक्नॉमिक क्लास, आई0ओ0एस0आर0 जनरल ऑफ रिसर्च एण्ड मैथड इन एजूकेशन, 7(1),48–53. Doi:10.9790/7388-0701044853
- मारिया, एसेल (1998). कॉग्नेटिव स्टाइल एण्ड स्लेक्टिड नॉन कॉग्नेटिव वेरिएवल्स इन रिलेशन टू अचीवमेंट इन मैथमैटिक्स ऑफ पुपिल्स ऑफ स्टैण्डर्ड X Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/28404

- मुओला, जे.एम. (2010). ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक अचीवमेन्ट मोटिवेशन एण्ड एन्वॉयरमेन्ट अमोंग स्टैण्डर्ड ऐट पुपल्स, एजूकेशनल रिसर्च एण्ड रिव्यू, 5(5),213-217. Retrieved from http://www.academicjournals.org/ERR2
- नायर, प्रकाश कृष्णन् (2007). ए पाथ एनालेसिस ऑफ रिलेशनशिप अमोंग जॉब स्ट्रेस, जॉब सेटिसफेक्शन, मोटिवेशन टू ट्रान्सफर एण्ड ट्रान्सफर ऑफ लर्निंग : परसेप्शन ऑफ ऑक्यूपेशनल सेफ्टी एण्ड हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन आउटरिच ट्रेनर, टेक्सास ए एण्ड एम यूनिवर्सिटीज।
- ओवेय, जोसेफ संडे और यारा, फिलीस ओलातुंड (2011). स्कूल फैस्लिटीज एण्ड एकडेमिक अचीवमेंट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल एग्रीकल्चर साइंस इन एकिती स्टेट, नाइजीरिया, एशियन सोशल साइन्स, 7, 64–74. DOI:http//dx.doi.org/10.5539/9ss.v7n7p64
- पचौरी, प्रो. गिरिश (2014) प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयासः आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, उत्तर प्रदेश
- पप्पट्टू, जसर (2017). ंअ ऑन फैमिली एन्वॉयरमेन्ट एण्ड इट्स इफैक्ट ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट इन साइन्स अमोंग सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च-ग्रन्थालय:5,428-436.doi:10.5281/zenodo.821727.
- प्रवीन, अफसाना (2013). पर्सनलिटी ट्रेट्स, स्टडी हैविट्स एण्ड एजूकेशनल एस्पिरेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देअर एकडेमिक अचीवमेंट Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/21099
- रानी, रेखा (2012). ए स्टडी ऑफ सेल्फ–कंसेप्स, इमोशनल इन्टैलीजेन्स एण्ड एकडेमिक एन्जाइटी ऑफ विजुअली चैलेंज्ड स्टूडेंट्स इन इनक्लुजिव एण्ड एक्सक्लुजिल स्कूल्स इन रिलेशन टू स्कोलिस्टिक अचीवमेंट Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/13524
- सलेमी, अब्देलातिफ; अल रकेब, नूफ अब्दुलहदी तथा अन्य (2017). ए पाथ एनालेसिस ऑफ स्टूडेंट्स इन्टरेस्ट इन स्टेम, विद् इस्पेसिफिक रिफरेन्स टू कतरी स्टूडेंट्स, जरनल ऑफ

मैथेमेटिक्स साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी एजूकेशन 13(9), 6045–6067 DOI:10.12973/eurasia. 2017.00999a

- सेलह, लुस्वेती; जैकिंटा, क्वेना; हेलेन, मोंडोह (2018). प्रिडिक्टिव पावर ऑफ कॉग्नेटिव स्टाइलऑन एकेडमिक परफॉरमेन्स ऑफ स्टूडेंट्स इन सलेक्टिड नेशनल सेकेण्डरी स्कूल इन केन्या, Cogent psychology, Retrieved from https://doi.org/10.1080/23311908
- शेखर, चन्द्र और चौधरी प्रिया (2017). इन्फलूएन्स ऑफ अचीवमेन्ट मोटिवेशन ऑन एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स, एशियन रेसोनेन्स, 6(3), Retrieved from RNI No.UPENG/2012/42622
- शिक्षा आयोग (1964–66), जयपालन, एन. (2000). हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इन इण्डिया : अटलान्टिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
- सोलिमेनिफर, ओमिड, शाबनी, फरजाना और मोरोवती, जेक्रोलह (2018). दा रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक अचीवमेन्ट मोटिवेशन एण्ड एकेडमिक वर्नआउट इन पोस्ट ग्रेजुएट स्टूडेंट्स ऑफ शाहिद चमरान यूनिवर्सिटी ऑफ अहवाज, जनरल ऑफ लाइफ साइन्स एण्ड बायोमेडिसिन, 3(3),233–236. Retrieved from https://jlsb.science-/line.com
- तिनाजेरो, कैरोलिना; लेमोस, सोनिया मारिया; अरायूजो, मर्ग्ररेट; फेरासेस, एम. जोसे और पैरामो, एम. फर्नाडा (2012). कॉगनेटिव स्टाइल एण्ड लर्निंग स्ट्रेटजिस एज फैक्टर विच अफेक्ट एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ ब्राजीलियाई यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स, Psicologia:Reflexaoe Critica,25(1), Retrieved from http://dx.doi.org/ 10.1590/s0102-79.72201.2000
- तोंगसिल्प, आसनी (2013). ए पाथ एनालेसिस ऑफ रिलेशनशिप बिटविन फैक्टरस विद् अचीवमेन्ट मोटिवेशन ऑफ स्टूडेंट्स ऑफ प्राइवेट यूनिवर्सिटीज इन बैंकॉक, प्रोसिडिया–सोशियल एण्ड बिहेवियरल साइन्सेज, 229–238. Retrieved from www.sciencedirect.com

- वर्जीनिया कोड (2012). दा स्टेट ऑफ वर्जीनिया डॉक्यूमेन्ट, Retrieved from http://definedterm.com/educational_facility
- वैस्ट, जॉन डब्ल्यू और क्हान, जेम्स वी. (2002). रिसर्च इन एजूकेशन : प्रेंटिस, हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लि., नई दिल्ली
- यरिस्वामी, डॉ. एम.सी. और दंडगल एस.एन. (2017). ए स्टडी ऑफ फैमिली क्लाइमेट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एडवान्सड रिसर्च इन एजूकेशन एण्ड टेक्नोलॉजी, 4(3), Retrieved from www.ijaret.com